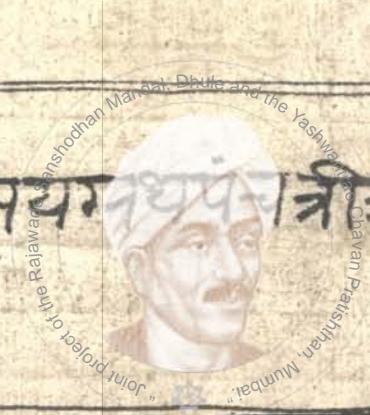


१

१३६१/१०८५

॥श्रीवास्तविजयग्रन्थपत्रीशतिमोद्यायप्रांभः॥



"Joint project of the Rajawadi Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Publisher, Mumbai."

(2)

९

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीशीताकांतायनमः ॥ देहबुधीलंकाध्येतन ॥ अहंबुधी
 मरिलारावण ॥ वरिस्तुपुनिभावबीमीषण ॥ उत्रतयावरिधरियेते ॥ १ ॥
 ज्ञानकव्याजनकतनया ॥ भेटलियेत्तुमिरद्वय ॥ मगस्वान्दविमुनिबेसोनीयो ॥
 जात्मारामचालिला ॥ ३ ॥ लागलाताय ॥ गजर ॥ राघवकीर्तिगातिवानर ॥ योज
 नेहोनसहस्र ॥ विमानतेक्षुभुंचाव ॥ ४ ॥ जैसापौणीमेचरोहीणिवर ॥ यश्च
 मैसजायसत्वर ॥ कींसमुद्दीजाहज ॥ ५ ॥ लोटीतसमीरवेगाहि ॥ ६ ॥ विमानि
 धंदाजाण ॥ वोक्तिनेवाजलिधपार ॥ ७ ॥ दिव्यमयप्रभापरिपुणी ॥ उत्तरपेष्येजा
 तसे ॥ ८ ॥ जैसाजातरविकुक्तमडन ॥ असुरकुक्काननस्तेषुण ॥ वामागिज़ ॥
 वनिजागर्भरत्न ॥ सौदामिनीमेधीजैशि ॥ ९ ॥ तौप्रतिबोलेरघुनदन ॥ का
 तेरवालेपाहविलोक्तुन ॥ लंकादिसदैदिव्यमान ॥ हेममयविशाङ्क ॥ १० ॥

पैलपांहेनींकुंबका॥ जैथंशक्रजित्सोमित्रेंमारिका॥ आलीरहिलोंतेसु
 वेका॥ प्राणवक्ष्यसेविलोकि॥ वा पैलपांहेंरणमंडका॥ युध्यजालेपैलंबका॥
 आदलेराधीससकका॥ माहाबकाठ्यवराक्रमिं॥ १॥ वज्रन्दीष्टीवीरपाख
 अंकपण॥ मतभाहीमतप्रधान॥ भयानकरारिरकुमकण॥ येथेंविट्डुन
 दाकीले॥ १०॥ इवांतकनराननकमवाहस कुमगिकुमत्रीशिराज् सुर॥ येथेंजा
 टलेसमग्र॥ जनकतन्यपांहपा॥ ११॥ व्यकरितासलदीन॥ येथेंआटलाह
 शावहन॥ हासमुडपांहवीकोकुन॥ उनक्कबोधीला॥ १२॥ पैलउतरवीरिंदर्श
 शयन॥ येथेसमुडभेटलायउन॥ पुठमक्याचक्कबोध्याचक्कपुर्ण॥ कीस्कीदापा
 हेंराजस॥ १३॥ पैलक्तेंपांहेपंपासरोवर॥ येथेंमेटलावायुकुमर॥ पैलस्थक्कंव
 किविर॥ सुग्रीवकवारेवधीयेल॥ १४॥ येथेंशवरिचाकलाउधार॥ येथेंक

(3)

श्रीराम

१२॥

बधवधीलासाच्चार ॥ पैलहिसेगौतमितिर ॥ दुष्पुणरवरवधीलायेये ॥ १५ ॥ ६५
 पैलपंचवटिपाहिगजगामिना । येथुनतुजनकेंरावणे ॥ सर्वीचबाश्रमपद्म
 नयने ॥ पांडुगोतमवीटोंचे ॥ १६ ॥ रामांगसुतिहणमंदकाणि ॥ हारिंकाढोरा
 जपाहनयनि ॥ येथेंदत्ताक्षयञ्जनुसपाडाछुहीटेनि ॥ तेटलोंठोतिंपाहेपां ॥ १७
 हुजगस्तोचाजाश्रमपाहें ॥ पुढेचोत्तरात्तेस्तानहे ॥ भारदाजजाश्रमजनकत
 नवे ॥ पुढेंतिर्धराज्ञप्रयाग ॥ १८ ॥ पैल वामाद्विसृत ॥ येथेंप्राणसरवाजाहेस
 रत ॥ पैलश्रंगवेळभाहुभक्त ॥ कोत्तरायकवसेतथे ॥ १९ ॥ रंवंजनाहिपां
 हेसाहर ॥ शरयुतिरिंजयोध्यानगर ॥ घवघवोतपरमसुहर ॥ वास्तव्यस्थक्ता
 मुचे ॥ २० ॥ परमश्नवहरकरुनि ॥ जावकिसहविचापपाणि ॥ हृषणजगत्तीजा ॥ २१ ॥
 श्रमिद्विषेकराहेनि ॥ मगपुढेगमनकरावे ॥ २२ ॥ रामेंजाशगिताविमानवालंजा

आ॒ष।३४॥

(३४)

लेनलगताक्षण ॥ पञ्चजानेकुवचन ॥ पञ्चाह्नीप्रतिबोलन् ॥ २२ ॥ जास्तासेमेलधेदेहनसु
नि ॥ तुजलोपातुद्रवेइलसदनी ॥ अणिककृष्णपत्न्यमिक्कनि ॥ तुजपुसनिलसाहीपा ॥ २३
रवणेतुजनेलेसेरिती ॥ कैसालंकेसजालारघयनि ॥ ऐसेपुसेलतेसति ॥ कथाकैशिजाली
ते ॥ २४ ॥ सागसक्वर्वर्लमान ॥ परिकेलेजेंसाग बंधन ॥ तद्यातियत्यायुन ॥ सर्विधिसांगेनक्षोग्य ॥
लेक्यासांगतांपुर्ण ॥ तुजनेअणिलाहनय ॥ लस राघवसांगततोनेविमान ॥ आश्रमासमिपउ
तरठेगरधा ॥ ठेलसेवादाचायजरा ॥ तेष्ठण ॥ अबर ॥ शिष्यजाउनिसत्वर ॥ अगस्तिजवक्त
सागति ॥ २५ ॥ समिविमानआलंपस्त्रिवर्ण ॥ रङ्ग ॥ स्त्रियाणिवानरिं ॥ तोंभगस्तिउठिलाझउहरे ॥
लण्ठेरघुकिरपात्ता ॥ २६ ॥ मगशिष्यघेउनेभपार ॥ रामासन्चालिलासमार ॥ कवलाहेजाश
माबोहरे ॥ कलरोहुवपात्तला ॥ २७ ॥ क्रूषिमेकाराभेरवतां ॥ उत्तरलविमानारव
लता ॥ पुढेयेतकशोहुवपिता ॥ जंगतिनेहरिवला ॥ २८ ॥ क्रूषिनेधावानित्वारत ॥

हृदधीरलारघुनाथ ॥ जैसावाचस्पतीजालंगित ॥ इच्छिवरशिष्ठाद्वेरं ॥ ३१ ॥ स
 वेंचुसौमीत्रासञ्जलिंगन ॥ तोरघोनमबोलुहंसेन ॥ जाजीजा अमसांडान ॥ को
 जालनिवर्णिय ॥ ३२ ॥ तोजगस्तीमनधरवेधीर ॥ सद्गुरद्वेषवारंवार ॥ तोरघो
 तमेनमस्कार ॥ साष्टंगघातलाक्षोपरि ॥ ३३ ॥ मागंजरप्पकंडिंकथागहन ॥
 शिताघुणिगळाद्विपंचनदन ॥ तंवापर नान्नरामलद्धुमण ॥ भूगस्तिज्ञा
 अमाप्रतिज्ञाले ॥ ३४ ॥ तेवक्षंजुग नान जाणान ॥ घेनलंनांतीरमदर्शन ॥
 पुरतवीलुद्वारिहन ॥ हृष्पदर्शर्ण काळि ॥ ३५ ॥ तेगोद्वजाठउनिरघुपति ॥
 तैनीराममिजगस्ति ॥ तेजन्नहरुजाताप्रीति ॥ बीजाघट्टसंवीप्रोतमा ॥ ३६ ॥
 ॥ ३६ ॥ ऐसबालतारिताधव ॥ प्रसातरदनकलरुद्व ॥ तेल्लीस्वीर विजय ॥
 हितुरुराधव ॥ नाहिवेभवतेधव ॥ ३७ ॥ विपरितकाक्षजाणान ॥ ना

होघेतलेंतुझेहर्षानैः ॥ अतिंत्रीयुक्तंशिनारभूण् ॥ लणोनजालोसामोरा ॥
 ३७॥ स्त्रीसजवधेनिमान् ॥ तुनिविकाररघुपति ॥ तुमानापमाननिहन् ॥
 सच्चीदानन्दपरब्रह्मतु ॥ ३९॥ तुजगाजीतपुण्ठिकाम् ॥ नोरपाधोकनीरुणिजा-
 राम् ॥ नानाविकीरशमविषम् ॥ ४०॥ जौकेनिजगस्तीते
 उत्तर ॥ जानन्दमयजालारघुविर ॥ ४१॥ अमाप्रतिरघुविर ॥ कलशाङ्गवनेता-
 जाला ॥ ४२॥ तोललापामुद्रादेहन् ॥ नकजाशिकारेधर्षन् ॥ गेलोजाअ-
 मातघउन् ॥ करनिपुजनपुस्तर् ॥ ४३॥ बदहतनयतुजाशिप्रीति ॥ अत्यतक्रीर-
 तसकीरघुपति ॥ कीवाविरक्तजसंचोति ॥ सांगस्थीतेकाशि ॥ ४४॥ विविच्चिरता-
 रघुनदन ॥ तोषवितजसोकितुझेमन ॥ तुमागलिसत्प्रणान ॥ समाधानकरितजसें
 कि ॥ ४५॥ यउपरिवेहराजनादान ॥ त्रीमुवनपनिचोपहराणि ॥ श्रीरामप्रतापवार्ता

५
श्रीराम॥ ४॥ ब्रत्तानेहकरोनियां ॥ ४५॥ लेणपरमहयाकरधुनाथ॥ मजशिष्ठेहकरिवहुत॥ तुं
लणसौस्त्रीलंपदवहुत॥ जनकजामातैसानके॥ ४६॥ तरिजसंतहयाकश्री
राम॥ मजवरिहयाकरिपरम॥ विरक्तसहनीः काम॥ रूपनामनाहोजया॥ ४७॥ तमज
घउनिगोलारावण॥ हयासमुद्रधुनेहन॥ करनिनानाप्रयत्न॥ मजसोउविलेश्रीरामें ॥ ४॥
॥ ४८॥ नातौलेपामुद्रालेणशित॥ तुं तके सनके तकभायें॥ मगयेउनिजनकजामातें॥
सोउविलेंकोणारिति॥ ४९॥ हर्षसागत लाचकि॥ म्याईछिलोभुगकंचुकी॥ तेजाणा ॥ विजय
नियकायेकि॥ जयोध्याप्रभुधांवीन ॥ ५०॥ सागरतीतवेषयेउन॥ मजघउबगला
रावण॥ मासावीयोगनामजापण॥ ५१॥ वहृपाषाङ्गालुगलि॥ ५२॥ मलकारणनाजीवनन्॥
मीत्रकरनचहुपुत्र॥ इक्रसुतेवधुनसमस्त॥ कपिवोरसुखिकल॥ ५३॥ मगलोकप्राण
इनहन॥ धाइलामाझमुधीलागुन॥ लेणजाकुनलकामुवन॥ रघुनंहनजाणिला॥ ५४॥

अषोदशप्रेमवाल्नरा॥ संगेंधेउनिगोलारामचन्द्र॥ वेदुनीयोलंकापुरा॥ युध्यजपारपैजा
 लें॥ ४४॥ संततिसंमतरावण॥ रणिमरितरीविकुक्तमुषण॥ राजोस्थापुनिबोभीषण॥
 पुष्यकारुदमग्नजाल॥ ५५॥ खोलबीलोकीजापुर्ण॥ तोंजङ्गतकलंच्चेतुबंधन॥ लं
 बायमानशत्योजन्॥ आणुनिपाषणवजोयेला॥ ५६॥ ससुद्रपालाणिलापाष
 ण॥ जाञ्चीर्यवाटलपमानि॥ जन्मनि नवनरानि॥ चेतुचरित्रकायेयलें॥ ५७॥
 तोलोपामुद्राबोलत॥ कायसांगशिरोंभज्जन्मत॥ पाषाणस्त्रितानाथ॥ बुजोना
 पुरषार्थकायहा॥ ५८॥ दाकीनयंथा रात॥ बुजिलानाहीकासागर॥ नलगतां
 क्षणमात्र॥ पलिनमाइयाप्रशिल्ला॥ ५९॥ अदिजगस्त्वोजायाबोलत॥ क्ष
 णयेतरस्तजलिशिता॥ लण्डणजाणीकेउणरघुनाथ॥ उतरजाताईसदे
 उं॥ ६०॥ लण्डणरघोतमान्वाजाताबाण॥ सत्पसमुदजातिजाटोन॥ बोहुमात्र

(6)

।५॥

नउरेजीवन॥ जीवसंपुर्णजाटीते॥ ६१॥ रामापाशिंचान्तरगण॥ ओहेतपरमब्रका
 द्यपुर्ण॥ सत्समुद्रिंचंजान्चमब॥ येकाघटकेतकरणार॥ ६२॥ लणसीकानकेलं
 जान्मन॥ तीरत्तुइयापलिन्चंसुत्रपुष्ट॥ नाशवतिचवान्तरगण॥ मामाशानकेवि
 करतिल॥ ६३॥ रघुनाथहाससावच्छब्दत॥ नगलहोंवरिबोंधीलाश्वेत॥ नहींतीर
 सरितानाथ॥ प्राशितांश्चणनलाग॥ संबोलतांजनकतनया॥ उगिचरहि
 लित्रुषिजाया॥ जसोजानकिलिपुरान् राजिया॥ सतोषविलोतकाकिं॥ ६४
 जगास्त्तेनंपुरजेलंरघुनंदन॥ सब वनीत्रुषिचोजाजा॥ पुष्टकिंवेसलारघु
 रण॥ श्रितेसहीलतेकाकिं॥ ६५॥ पुष्टकउवलतेषुन॥ चालिलेंउयोध्यापंथ॥ ६६॥
 लक्ष्मन॥ तांसारदाजजाश्रमीयेउन॥ उतरलतकाप्रयगिं॥ ६७॥ मनान्तुच
 तिरघुनंदन॥ ध्वावेसारदाजचेंदशन॥ यालगिउतरलेवोमान॥ इष्टाजा

नोनप्रसुन्नी॥८८॥ भारद्वाजासहितजपारा॥ चहुकुनिधांवातित्र्येष्वरा॥ जैसे
 माहानीहिन्देपुरा॥ सीधुशिजातिस्तावया॥८९॥ रघुतमेंखोलंउतरोन॥ नमीले
 समस्तऋषिजन॥ भारद्वाजंजालींगन॥ प्रभकरानीहिधलें॥९०॥ लण्ठन्यजाजी
 चाहिवस॥ धरासजालाजपोध्याधीरा॥ जीलिंवर्षेचतुर्हरा॥ जाणिन्चोहादिवसज
 धीक॥९१॥ भारद्वाजंमगैक्षुमण॥ जालींगलप्रीतिकरन॥ तेद्विवरिंरघुनंहन॥
 जापुलजालीश्रिराहाविलो॥९२॥ हणठलनमनधन॥ टाकावंतुज करनजा
 वाकुन॥ फँकेमुकुजाणुन॥ केलपुलनरमान्या॥९३॥ मगतोजगतोध्याररघुनाया
 श्वेहुनभताससागन॥ लण्ठन्यमजाजराहीलायय्॥ त्रीतस्तनत्र्येन्य॥९४॥
 तारपुर्दजाउनत्वरित॥ भरताशिकरावश्वता॥ शुगवकामुक्षकमत्क॥ त्यसाहीवाद
 तकरावे॥९५॥ ऐशिजाजाहेतान्यिपुर्ण॥ वंदुनियारघुविरचरण॥ वायुसुनक

४
॥श्रीराम
॥६॥

लेउडाण॥ पित्याहुनिचपूकत्वं॥ ७६॥ गगनिहनिजकेउतरत॥ तैसागुह्य
कुजाश्रमिहनुमते॥ येउनिवोलभक्तस्मात्॥ अयोध्यानाथजालाहो॥ ७७
जाजगुहानदमुक्तकंद॥ तुरतदद्यारवीहमिलिंद॥ तोरघनोरमत्कवरद॥ जव
किजाकुजागिणजबदा॥ एसगुह्यकेरकनावन्धन॥ वासुदेवानंदकरञ्ज॥ धोवानी॥ वीजय
मारुतीचेचरण॥ सद्गदहाउनधरियहु॥ ७८॥ तावोक्तखोनपरमभक्तददिधरहनुमत॥
गुह्यकमागुतीलाटत॥ चरणावरिमारुत्॥ ७९॥ द्विगहतनमनधन॥ वावाक्षिनतु॥ १६॥
ज्यवरुन॥ मगफक्तसुमनजाणुन॥ हवन् तप गीलागुह्यक॥ ८०॥ गुह्यकाशिलणहनुम
त॥ नेवेलौदियामासिवरित॥ स्वामिआलेकरश्वत्॥ अरताप्रतीजाउनीया॥ ८१॥
दोघेहोउटिलेतद्विषणि॥ यक्तमकाचाहातधरनी॥ दोघहिमकशिरामणि॥ वेगकारोनीजा
ताती॥ ८२॥ तोनेदियामीभरत॥ वोयनीदिवसमाजीत॥ द्विगजातानयाचिरघुनाथ॥

चतुर्दशवर्षेणोटलिं ॥८४॥ जरतसर्वगुणिसंपन्न ॥ लोमजनसमुद्रोचामीन ॥ कोवेरा
 ग्यवैराग्मिर्बाहीरापुर्ण ॥ असोलीकमणिह ॥८५॥ कीवीवेकरागेचालोटथोर ॥ की
 जनाचाचिसास्कर ॥ कीहमंसुधर्तासुरन्तक्र ॥ कीसरोवरनिश्चयाच्च ॥८६॥
 ऐसामूरततोत्तेवीक्ष ॥ लण्यावयचिशिमाजालि ॥ रामप्रेम्काचिमाउलि ॥ अजुन
 इशीषोपडन ॥८७॥ आताहृदहृदकुन ॥ धोजाइनरघुनंहन ॥ तालूकाचिकुड
 करन ॥ चेतविलाजगनकेकसुते ॥८८॥ मापिहोलाहनपहर ॥ जगनोतघाला
 वयाशरिर ॥ सीध्यजालामरतवेर ॥ परमामीयकररामाच्च ॥८९॥ कुंडासमी
 प्रउभारहुन ॥ अंतरिजाडीविलेरामध्यान ॥ मुगुरुकुडलेंजाकीणनयन ॥ सुहां
 स्यवहनसावक्ष ॥९०॥ उडिघालाविजाजात ॥ तोसमीपजालाहनुमंत ॥
 लणजालाजिरघुनाथ ॥ दशमुखवातकजगदामा ॥९१॥ जालासुराचाकेवरि ॥

४

श्रीराम

५॥

आलाजित्क जनसाहा करि ॥ भरतनेत्र उधिते भव सोर ॥ तोमारो तिधि की
 न मस्कार ॥ १३॥ उष्ण कोऽजलत ॥ घायाकरणि उह के स्मरत ॥ स्याशिजो वन पाजी
 जे जु के स्मात ॥ तैसा भरत सुख न वला ॥ १४॥ चकोर असता भुधा क्रात ॥ जु के स्मा-
 त उगवे निशा बाथ ॥ तैसा ज्ञानं दलाल रल ॥ हनुमंत शिरे रवो नै ॥ १५॥ उच्च कोनी
 यं परम प्रिति ॥ हर्दै जाली दगम ॥ लाल काठ जाहुर चुपति ॥ हावि भज
 प्राण सख या ॥ १५॥ प्राण जानि जन द
 नावी ऐक तांज के स्मात ॥ घे उन जा-
 का पदा ॥ १६॥ मगहनुमत शिव सुन ॥
 पुश्चिल सक कुवन मान ॥ अमुल वघि वक रघन ॥ तैस युर कथय लै ॥ १७॥ लग्न
 क्रपारि धुर धुन दन ॥ क्षण हणा तुमनि जाठ वण ॥ करन लहण के जाइन ॥ भेर
 नाप्रतिभटा वया ॥ १८॥ धन्य तुमन्वं धुपण ॥ शक्रपदा तुल्य राज टाकुन ॥ सक

॥५॥

कमंगकमोगसजुन। नंदिग्नमिवेसलं ॥९९॥ भरतलणेमारुति। मूरजिं
 बुउजगस्ती। तमार्णविबुउलदिनपति। दोषेंसगिरथीजरकीये। १०० दोषजरि
 मौगेलधरितांकीति। जरिमर्याहाटाकिलहिनपति। तरिराज्यवासनामारुति।
 मजहोइलजाणपां। १। असोशात्रुद्धारिलएक्षरत। तुजयेध्येशिजावेत्वरित।
 वशिष्ठसुनिजाणिसुमंत। तयांकुतकारांग। २। जरणादयहातसत्वर। प्रजा-
 सेनाधउनसत्वर। जगद्याशिसभार जरेकस्त्रयेइज्जि। ३। दृशेजात्ताता-
 शत्रुद्ध। अयाध्येशिगलाधांवीन। उच्चवेतप्रसन्नबहुन। सुमताडिमिटल। ४
 लणपाहाताकायउठात्वरित। जवकिजाकुरद्युनाथ। नंदिग्नमारिहुमत।
 पुढेसत्वरसंगोजाला। ५। हृषेधिवत्सुमंत। भोनंदनमायेगगनात। दुइतीत्राहा
 टिल्यात्वरित। आलारसुनाथलणानियं। ६। दणणित्याराज्यक्षेर। नादनमाय

१

ओरम॥

॥८॥

९।

चीजबरि॥ छुत्रुद्धंराजसहनानरि॥ कक्षसचडविलेलवलोहे॥ ७॥ सोर्येहैजकसा
 त॥ प्रध्वरेवरकाणधिवता॥ तैसीनगरप्रधटलिमाति॥ जालारसुनाधलणनियां॥ ८॥ आ
 कोंजाकिजनेधांवती॥ अंगिरामांचउभारली॥ सुरवनमायचीनाति॥ नयनिलोटतिसुरव
 बीडु॥ ९॥ सोकापभेदकमारा॥ सीध्यजालेपमत्वरा॥ कुंजरमिरचादासहस्र॥ येकसरठोकी
 ल्या॥ १०॥ शत्रुघ्नजाणिसुमंता॥ आलकुशत्व्यचासक्तवता॥ लपेमानेजालेहरसुनाया॥ द्विनासेमित्रासम
 वेदता॥ ११॥ कोशत्व्यसुमित्रादविज्ञपी॥ उच्चबक्त्व्यजानेदकरवी॥ सुरनाश्वलोटलेनयनि॥
 बेसत्व्यावहनिसत्वरा॥ १२॥ वारापारिजातुना॥ आनेदसंगशत्रुघ्न॥ समिपजालेजीरधु॥ विजय
 नंहन॥ चलासत्वरसामैरा॥ १३॥ आलज्जेकन्तरव्यनाय॥ स्वानेदउच्चबक्त्व्याप्रसुता॥ चालुरंग
 हक्षसमस्त॥ नगरावाहरनिघाले॥ १४॥ वैद्युत्रायध्वजस्तककति॥ मकरविरहेपु
 ठेयाठती॥ अष्टाह्वाप्रजनिविधति॥ नगरावाहरसत्वरा॥ १५॥ कैकैकोशत्व्यसुमित्रा॥ वा
 सुरवासनारुढगालित्या॥ मगळवाधेध्वनीलगत्या॥ तोसोहाकानवर्णवि॥ १६

॥३५॥

(१४)

वशिष्ठरुद्रसुमंता॥येकिंरथिवैसलेत्वरित॥आनेदमयजनउद्दीत॥श्रीसुनायपाहाव
या॥१७॥ घोडिउतरतालगनधिः॥कोंधावतिबन्हाउ॥किंगंगेचीजवकुलरताधिः॥
लघाल्लातलरने॥१८॥ तैसेन्नल्लानंदकरणा॥उद्धावतिभयाध्येचलन॥इकेजरतशिताशि
कहारण॥सुर्येहृदिउठीले॥१९॥ देविनिलयनीममसारन॥पुढेचालिकेउमयामिकोन॥जरत
मणेलाजिधन्यनयन॥रामनिधानहरवन॥२०॥ इकेजारद्वाजान्विजाजाधेउन॥पुष्ट्य
कींवैसेसुद्धुनंदन॥सतरस्वलिलेवीमान॥जयध्यापहृष्टुनीयां॥२१॥ लोकरतशिल्पणे
हनुमतै॥उर्ध्वपंथेपौहाजीत्वरित॥२२॥ यज्ञवरतंपाहात॥तोजङ्गलदरिखिले॥२३॥ भ
रथल्पणहनुमंताशि॥ठेकायजसंभाव्यज्ञकाशि॥वायवाजातिमानशी॥जात्ययम
जवाटने॥२४॥ हनुमतल्पणपुष्ट्यकवीमान॥सेनसहीतशितारमण॥वरियेनातिवैसोन
परमवगेकरनिया॥२५॥ ठेसेंसंगतावायुनंदन॥मरथंधालकेकोटांगण॥ मायनिउ

१०

॥श्रीराम॥

धर्ववस्तुकरन् ॥ ये तेविमानि विलोक्नि ॥ २५ ॥ मागुति साष्टांग नमस्कारा ॥ प्रेमेघलिप्तरथनि
 रा ॥ चद्रापाह जैसा चक्कारा ॥ गगोनोदीर्घ प्रितने ॥ २६ ॥ मारुति चाहुस्तधरन् ॥ पुढेचालके रौने
 हन ॥ तेराधवर्द्धिकरन् ॥ पुष्पकउत्तरभुमिवीर ॥ २७ ॥ शितेसाहितरघुनंदना ॥ विमानरवाव
 उत्तरोन ॥ जयोध्येश्वीसाष्टांगनमन ॥ राजिनवर्णन करिततेक्षण ॥ २८ ॥ जन्मभुमिजान्हिविजननि ॥

॥१॥

आ

सङ्करस्तुक्षपवित्रअवनि ॥ शिवहीरप्रति प्रदर्शने ॥ साष्टांगनमनकरने ॥ २९ ॥ तपस्त्रीवेर ॥ वीजय
 विधृलापुण ॥ यज्ञप्रसादध्वजे द्वेरवान ॥ वंद इमसामाधीस्थान ॥ माहापुरुषांचिन्दविं ॥ ३० ॥
 सत्यवृत्तिश्रीरघुनाथ ॥ लप्तानिजयाध्या राव सनकरिता ॥ तोहनुमलसमवता ॥ जवकिम
 रथदेरिवला ॥ ३१ ॥ द्वाटलाजष्टमावेकरन ॥ घालितयेतलायोगण ॥ रामवियोगेकरन ॥ ॥१॥
 शारिरक्रष्णजाहाल ॥ ३२ ॥ भस्मलविकेशरिराशि ॥ वस्त्रकलेवेशीततापसी ॥ यैसामर
 धदेरवतामानाशि ॥ शिलावरकक्षविकिला ॥ ३३ ॥ चरणिक्रमितभुमउक्ता ॥ पुढेचालकततमालनिका ॥

तान्धयावधाश्चेहाऽप्य। धेनुबहुरत्जैशिकां। ३४। मरथ्येकैसंदेविले रघनाथा। बहुतदिव
 सोगलपिता। तोलंकर्दीष्टीदेवतां। धांवेजैसाश्चेहादरं। ३५। तैसंमरथंदेवनानि। मिठी
 पालिरामचरण। कोंगलेधनदेवतां नयनि। धांवजसाकाशीया। ३६। कीजन्मांधास
 जोलेनयृनै। कीमरतयासञ्चुतपान। कोंदीङ्ग्रीयासनिधान। अकस्मात्जैसंप्रात्यजा
 ते। ३७। कीज्ञीवेमारितांतस्करि। पाठि राम। धूकैवेनारि। तोजे द्विसुखवेजंति।
 मरथासैतसंवाटले। ३८। राघवेउच्छुतवर। मरथ्यद्रढ्यरिलाहस्ति। होघाच्चनयनि
 लवलाही। प्रमोहकलाटले। ३९। हरित। नमेष्टले। किंकाराशिमीत्रयकजाल। कीही
 राष्ट्रीच्येकवटक। कोकैजैसयकजाल। ४०। वहांतराण्डिंच्चर्य। ऐक्यतापरस्परंये
 त। लैसाह्वरामुरवालजाणिमरथ। येकपणेमिकाले। ४१। समानसंतोषसमानप्री
 ति। सोउवंडननाटन्वीलि। वीयोगवथादीगानापरलि। जीजीतीलितेवेक्षि। ४२।

११

॥शीराम॥

जालिंगनेदउनवेगोक्तेहोति॥ परिजंतरिनकेनितसी॥ सोहकाडोक्तपाहाति॥ सु
मीवज्ञाणिबीमीषण॥ ४३॥ लप्तिसरथजाणिरघुपति॥ जङ्गुलदोधान्तीप्रति॥
येकसियेकजावडति॥ मनाहुनिपलिकेड॥ ४४॥ बध्साधुनिरकमत्का॥ चौप्रका
रेवंधत्तस्य॥ राजयाकुनिजेरप्यात॥ चतुर्द्वावरधेवसला॥ ४५॥ नांहोतरि

॥१०॥

जामुचंबंधुपण॥ येकाचयेकर्धा तत्त्वा॥ ४६॥ रामामद्वारणजालोल्पणान॥ वं ॥ वीजय॥
यजालोत्रीनुवनि॥ ४७॥ परिवार्ता अनुवाकण॥ यां चाविरोधेकरन॥ स
खाजालारघुन्दनं सच्चोदान हल ॥ ४८॥ असामरथं प्रमेकरन॥ वं
दिलेजनकजन्येन्चरण॥ जैसेबाक्ताप्रतिधानान॥ रिघेधेन्चेकसारि॥ ४९ ॥ १०॥
यवरिमरथभाणिलघुहुमण॥ उच्चवक्तव्यं प्रमरसंकरन॥ येकमुकासजा
लीगान॥ हलेजालेनधवा॥ ५०॥ सुमीवजाणिबीमीषण॥ उभयतारिल्पण
रघुनंदन॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com